

आसमीमांसा (फोल्डर नं. ०१०७०)
समन्तभद्र विरचित – अनुवादक-जुगलकिशोर मुख्तार

मुख्य टाइटल	
ग्रन्थानुक्रम	
समर्पण -----	५
प्रकाशकीय -----	७
धन्यवाद -----	८
अनुवादकीय वक्तव्य -----	९
प्रस्तावना -----	१-४७
विषय-सूची -----	४९
मूलग्रन्थ – अनुवाद सहित -----	१-१०७
प्रथम परिच्छेद	
अनुवादकीय मंगल प्रतिज्ञा -----	२
देवागमादि विभूतियाँ आसगुरुत्वकी हेतु नहीं -----	३
बहिरन्तर्विग्रहादिमहोदय आस-गुरुत्वका हेतु नहीं -----	४
तीर्थकरत्व भी आस-गुरुत्वका हेतु नहीं – तब गुरु कौन -----	५
दोषों तथा आवरणोंकी पूर्णतः हानि संभव -----	६
सर्वज्ञ-संस्थिति -----	७
निर्दोष सर्वज्ञ कौन और किस हेतु से -----	८
सर्वथैकान्तवादी आसोंका स्वेष्ट प्रमाण-बाधित-----	९
सर्वथैकान्त-रक्तोंके शुभाशुभ कर्मादिक नहीं बनते -----	९
भावैकान्तकी सदोषता -----	१५
प्रगाभाव-प्रध्वंसभावके विलोप में दोष -----	१६
अन्योन्याभाव-अत्यान्ताभावके विलोपमें दोष -----	१६
अभावैकान्तकी सदोषता -----	१७
उक्त उभय और अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	१७
उक्त एकान्तोंकी निर्दोष-विधि व्यवस्था -----	१८
सत्-असत्-मान्यताकी निर्दोष विधि -----	१९
उभय तथा अवक्तव्यकी निर्दोष मान्यतामें हेतु -----	२०
अस्तित्वधर्म नास्तित्वके साथ अविनाभावी -----	२०
नास्तित्वधर्म अस्तित्वके साथ अविनाभावी -----	२१
शब्दगोचर-विशेष्य विधि निषेधात्मक -----	२१
शेष भंग भी नय-योगसे अविराधरूप -----	२२
वस्तुका अर्थक्रियाकारित्व कब बनता है -----	२२

धर्म-धर्ममें अर्थभिन्नता और धर्मोंकी मुख्य-गौणता -----	२३
उक्त भगवती प्रक्रियाकी एकानेकादि विकल्पोंमें भी योजना -----	२३
द्वितीय परिच्छेद	
अद्वैत-एकान्तकी सदोषता -----	२४
कर्मफलादिका कोई द्वैत नहीं बनता -----	२५
हेतु आदिसे अद्वैत-सिद्धिमें द्वैतापत्ति -----	२५
द्वैतके बिना अद्वैत नहीं होता -----	२६
पृथक्त्व-एकान्तकी सदोषता -----	२७
एकत्वके लोपमें सन्तानादिक नहीं बनते -----	२७
ज्ञानको ज्ञेयसे सर्वथा भिन्न माननेमें दोषथ -----	२८
वचनोंको सामान्यार्थक माननेमें दोष -----	२८
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	२९
पृथक्त्व-एकत्व एकान्तोंका अवस्तुत्व-वस्तुत्व -----	३०
एकत्व-पृथक्त्व एकान्तोंकी निर्दोष व्यवस्था -----	३०
विवक्षा तथा अविवक्षा सत्की ही होती है -----	३१
एक वस्तुमें भेद और अभेदकी अविरोध विधि -----	३१
तृतीय परिच्छेद	
नित्यत्व-एकान्तकी सदोषता -----	३३
प्रमाण और कारकोंके नित्य होनेपर विक्रिया कैसी -----	३४
कार्यके सर्वथा सत् होने पर उत्पत्ति आदि नहीं बनती -----	३४
नित्यत्वैकान्तमें पुण्य-पापादि नहीं बनते -----	३६
क्षणिक-एकान्तकी सदोषता -----	३६
कार्यके सर्वथा असत् होनेपर दोषापत्ति -----	३७
क्षणिकैकान्तमें हेतु-फलभावादि नहीं बनते -----	३७
संवृति और मुख्यार्थकी स्थिति -----	३८
चतुष्कोटि-विकल्पके अवक्तव्य की बौद्ध मान्यता -----	३८
अवक्तव्यकी उक्त मान्यतामें दोष -----	३९
निषेध सत्का होता है असत्का नहीं -----	४०
अवस्तुकी अवक्तव्यता और वस्तुकी अवस्तुता -----	४१
सर्वधर्मोंके अवक्तव्य होनेपर उनका कथन नहीं बनता -----	४२
अवाच्यका हेतु अशक्ति, अभाव या अबोध -----	४३
क्षणिकैकान्तमें हिंसा हिंसकादि की विडम्बना -----	४४
नाशको निर्हेतुक माननेपर दोषापत्ति -----	४५
विरूपकार्यारम्भके लिए हेतुकी मान्यतामें दोष -----	४६
स्कन्धादिके स्थित्युत्पत्तिव्यय नहीं बनता -----	४७

उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	४९
नित्य-क्षणिक एकान्तोंकी निर्दोष व्यवस्थाविधि -----	४९
उत्पाद-व्यय सामान्यका नहीं विशेषका होता है -----	५०
उत्पादादिकी भिन्नता और निरपेक्ष होनेपर अवस्तुता -----	५१
एक द्रव्यकी नाशोत्पादस्थिति में भिन्न भावोंकी उत्पत्ति -----	५२
वस्तुत्वकी त्रयात्मकता -----	५३
चतुर्थ परिच्छेद	
कार्य-कारणोंकी सर्वथा भिन्नताका एकान्त -----	५४
उक्त भिन्नतैकान्तमें दोष -----	५६
अनन्यता-एकांतकी सदोषता -----	६०
कार्यकी भ्रान्तिसे कारणकी भ्रान्ति तथा उभयाभावादिक -----	६१
कार्य-कारणादिका एकत्व माननेपर दोष -----	६१
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	६३
एकता और अनेकताकी निर्दोष व्यवस्था -----	६३
पंचम परिच्छेद	
सिद्धिके आपेक्षिक-अनापेक्षिक एकान्तोंकी सदोषता -----	६६
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	६८
उक्त अपेक्षादिक एकान्तोंकी निर्दोष-व्यवस्था -----	६८
षष्ठम परिच्छेद	
सर्वथा हेतुसिद्ध तता आगमसिद्ध एकान्तोंकी सदोषता -----	६९
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	७०
हेतु तथा आगमसे निर्दोष सिद्धिके दृष्टि -----	७१
सप्तम परिच्छेद	
अन्तरंगार्थता-एकान्तकी बौद्धमान्यता सदोष -----	७२
विज्ञप्ति-मात्रताके एकान्तमें साध्य-साधनादि नहीं बनते -----	७३
बरिरंगार्थता-एकान्तकी सदोषता -----	७४
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	७५
उक्त दोनों एकान्तोंमें अपेक्षा भेदसे सामंजस्य -----	७५
जीवशब्द संज्ञा होनेसे सबाह्यार्थ है -----	७६
संज्ञात्व-हेतुमें व्यभिचार-दोषका निराकरण -----	७७
संज्ञात्व-हेतुमें विज्ञानादैतवादी की शंकाका निरसन -----	७८
बुद्धि तता शब्दकी प्रामाण्यता और सत्यानृतकी व्यवस्था बाह्यार्थके होने न होने पर निर्भर -----	८०
अष्टम परिच्छेद	
दैवसे सिद्धिके एकान्तकी सदोषता -----	८१

पौरुषसे सिद्धिके एकान्तकी सदोषता -----	८२
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	८४
देव पुरुषार्थ एकान्तोंकी निर्दोष-विधि -----	८५
नवम परिच्छेद	
परमे दुःख-सुखसे पाप पुण्यके एकान्तकी सदोषता -----	८५
स्वम दुःख-सुखसे पुण्य-पापके एकान्तकी सदोषता -----	८८
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	९०
पुण्य पापकी निर्दोष व्यवस्था -----	९०
दशम परिच्छेद	
अज्ञानसे बन्धका और अल्पज्ञानसे मोक्षका एकान्त -----	९३
उक्त उभय और अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता -----	९४
अज्ञान-अल्पज्ञानसे बन्ध मोक्षकी निर्दोष-विधि -----	९४
कर्मबन्धानुसार संसार विविधरूप और बद्ध जीव शुद्धि-अशुद्धिके भेदसे दो बेदरूप -----	९४
शुद्धि-अशुद्धि दो शक्तियोंकी सादि-अनादि व्यक्ति -----	९५
प्रमाणका लक्षण और उसके भेद -----	९६
प्रमाणोंका फल -----	९६
स्यात्त्रिपातकी अर्थ व्यवस्था -----	९७
स्याद्वाद और केवलज्ञानमें भेद निर्देश -----	९९
नय हेतुका लक्षण -----	९९
द्रव्यका स्वरूप और भेदोंकी सूचना -----	१००
निरपेक्ष और सापेक्ष नयोंकी स्थिति -----	१००
वस्तुको विधि-वाक्यादि-द्वारा नियमित किया जाता है -----	१०१
तदतद्रूप वस्तुको तद्रूप ही कहनेवाली वाणी सत्य नहीं-----	१०२
वाक्-स्वभाव निर्देश, तद्धिन्न वाक्य अवस्तु -----	१०३
अभिप्रेत-विशेषकी प्राप्ति साक्षात् साधन -----	१०४
स्याद्वाद संस्थिति -----	१०५
आस मीमांसाका उद्देश्य -----	१०६
अनुवादकीय अन्त्य मंगल -----	१०६
कारिकानुक्रमणिका -----	१०८
प्रमुखशब्द-सूची -----	१११